रात्री माना अंधकार! रात्री अंधकार का सूचक हैं। मनुष्य जीवन की दुःख, अशांती, निराशा, उदासी आदी नकारात्मक भावनाओं का सुचक यह 'रात्रि' ही तो हैं।

जब काई दिशा विहीन होकर भटकता हैं या लक्ष्यहीन होकर असंमजसता से भटकता हैं, तभी रात्रि के अंधकार के साथ उसकी तुलना की जाती हैं। दिन के बाद रात, रात के बाद दिन आता हैं, रात्रि दिन कि समाप्ति की सूचना देती और उजाले की आशा जगाती है इस प्रकार रात और दिन के चक्र में प्राणी अपने जीवन चक्र भी छोटे-बड़े, सुख-दुःख के चक्कर को भी काटता रहता हैं।

अंधियारा उपेक्षीत है, उजाला अपेक्षीत हैं। हर कोई अपने जीवन के अंदर अंधीयारे को मीटाकर, दुर्भावनाओं से जुड़ी निराशा, उदासी, भटकना आदि से बचना चाहता हैं। उससे बाहर निकलना चाहता हैं। परंतु हर इंसान उजाला, रोशनी, प्रकाश की चाह में उसका इंतजार करता हैं। और उसके लिए जितने भी प्रयत्न करने पड़े वो युद्ध के भांती करने के लिए तैयार होता हैं। झुंझने को तैयार हैं। उजाले में अपनेपन की खुशी हैं, सुख हैं, शांती हैं, आनंद हैं, प्रेम हैं, उत्साह हैं, उमंग हैं। कुछ कर जाने की तमन्ना हैं, उस तमन्ना को लक्ष्य के रूप में, लक्ष्य पर पहुंचने कि वो हिम्मत बटोरने का उत्साही हैं। जीवन के उजाले में वो अपने सही अस्तित्व के सही रूप को देख पाता, जान पाता, पहचान पाता हैं। अपने स्वयं के जीने का वजुद समझ पाता हैं और उन उजाले में वो वजुद को सार्थक कर पाता हैं।

परंतु ये कौनसी रात्री हैं जिसका इंतजार है, जिस रात्री को उत्सव के रूप में मनाने की पूर्व तैयारियाँ हो रही हैं, जिसके लिए तरसते हैं। जिसको पसंद करते हैं।

जैसे भूखा प्यासा बच्चा अपनी माँ को तरसता हैं, क्योंकि माँ अपनी ममता से संतुष्ट करती हैं। उसी प्रकार ये रात्रि भी श्रद्धाळू भक्त को अपने इष्ट से मिलाती हैं, बच्चे को माँ से मिलाती हैं, अंधकार में ठोकर खाने वालों को सुर्य की प्रथम किरण की नई रोशनी देती हैं, अंधकार में टिमटिमाते तारे जो दिशा दिखानेवाले नक्षत्र और मार्गप्रदर्शन करनेवाला ध्रुव तारा समान हैं, शितल चांदनी की रोशनी प्रदान करने वाला हैं, इसको पाना चाहते हैं। यह रात्रि 'नवरात्री' नामक धार्मिक त्योहार से जुड़ी हुई हैं। अर्थात जीवन में नया पन लाती हैं। अर्थात उत्साह, उमंग, आशा, प्रेरणा, जोश, होश, हिम्मत ऐसी कई सकारात्मक भावनाओं के उजाले को पवित्रता सुख-शांति के साथ लाती हैं। तो क्यों नहीं उसका इंतजार होगा।

तो याद करें हमारे भारत देश की अनेकानेक उन देवियों – शिव - शक्तियों को जीनका गायन, पूजन और महिमा शास्त्रों में हैं। देवीयों के गुण विशेषता शक्तियों के कारण उनके अलग अलग नाम दिये हैं। जैसे लक्ष्मी को धन की देवी, दुर्गा को शक्ति की देवी, सरस्वती को ज्ञान की देवी, गायत्री को सर्व मनोकामनायें पूर्ण करने वाली देवी, संतोषी को संतुष्टता की देवी, ऐसे ही जगत अंबा सर्व शक्तियों की दाता देवी, ऐसे भिन्न भिन्न देवीयों के साथ भिन्न भिन्न शक्ति का गायन है। हरेक देवी का अपना विशेष आध्यात्मिक रहस्य लिए हुए वाहन (आसन) भी हैं। जैसे सरस्वती की मोर पर सवारी, जगत अंबा की शेर पर, लक्ष्मी जी को कमल पर दिखाते हैं। उसी प्रकार देवीयों की शक्तियों को अस्त्र-शस्त्रधारी भी दर्शाया हैं। जिन शस्त्रों में तलवार, त्रिशुल,

खडग, कुल्हाडी, आदि अनेक शस्त्र भी दिखाते हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि, उनको कालीका असुर संहारीणी के भयानक स्वरूपमें भी दिखाते, दुसरी तरफ अति आकर्षक मोहिनी दर्शन, ममता सम माँ के रूप में भी दिखाते है। और भक्त उनकी माँ के रूप में प्रार्थना करते, मंत्र बोलते, स्त्रोत गाते, आरती, आराधना, पूजा, उपासना करते, सिद्धिओं को भी प्राप्त करते और गुजरात में तो गरबे भी गाते हैं। जिसमें माँ के नाम की, रूप, गुण, कर्तव्यों की, श्रृगांर की, उनके रहने के स्थान की, स्नेह, संपर्क, व्यवहार में आने वालों की महिमा होती हैं।

तो प्रश्न उठता है कि, यह कौन सी नारियाँ थी जिन नारियों को मंदिरो में अविनाशी, पूज्यनीय ऊँच स्थान प्राप्त हुआ। कौन सा वह समय था जब ऐसी नारियाँ इस धरती पर थी। कौन से वह असुर थे जिनका उन्हों ने संहार किया? शास्त्रो में माँ के दिव्य कर्तव्य की व असुर संहार की गाथायें लिखी हुई है। हर कहानी के साथ, विशेष असुरों के नाम जुड़े हुए हैं। वर्तमान समय ऐसे संहार करने योग्य असुर तो घर घर में विराजमान हैं। आज घर घर में रावण, दुःशासन, दुर्योधन, महिषासुर, अकासुर, बकासुर अनेका अनेक असुर गुप्त रूप में अपने जुल्मों से, अपने सितमों से, अनेक सीताओं को, द्रौपदीयों को सता रहे हैं, उनकी लाज लुट रहे हैं। जिस भारत देश में, ऋषि मुनियों ने यह सिखाया 'यत्र पूज्यते नारी, रमन्ते तत्र देवता' अब ना नारी की पूजा हैं ना कोई देवता है। तो ये सुवर्ण काल कब था? शक्तियों के गायन की गाथा, वास्तविक स्वरूप में थी? तो क्या शक्तियाँ वास्तविक स्वरूप में फिर से नारी के रूप में जन्म लेगी जो सितमों को ढाने वाले, सृष्टि को दुःखी, अशांत काली करने वाले असुरों का संहार करेगी? क्या हम पुण्य उदय सृष्टि पर देख सकेगें? सुख के सौभाग्य की प्रथम किरण का हम कभी अनुभव कर सकेंगे? या फिर हम कभी देवीयों को याद कभी फरियाद ही करते रहेंगे! दुःखी होकर माँ माँ कहकर रोते रहेंगे!

<u>सुर और असुर</u> ः सुर माना देवता और असुर माना जो देवता नहीं हैं वह। देवता माना दिव्य प्रकृति वाले, दिव्य गुणधारी, मुकुटधारी, शासनधारी, दिव्य मनुष्यों को सुर कहा गया हैं। जो पवित्रता सुख, शांति, आनंद में रमण करते थे, संपति धनधान्य से भरपुर और संपन्न थे और अपनी प्रजा को भी संपन्न रखते थे। जो स्थूल अर्थात अस्त्र शस्त्र द्वारा हिंसा और सुक्ष्म अर्थात **5** विकारों द्वारा हिंसा से दुर रहते थे। अर्थात शांत, शितल, धीर्यता, नम्रता व अहिंसक स्वभाव वाले थे। और असुर माना विषय विकारों से ग्रस्त, बेताज बादशाह बनकर चलनेवाले, स्थुल और सुक्ष्म हिंसा भी करते रहते थे। लोभ, लालच, अभिमान, घृणा, वैरवृति, बदला लेने की भावना, इर्ष्या, द्वेष, जूठ बोलना, फ्रॉड करना आदि ..... मतलब षडरिपू से ग्रसीत स्वयम् त्रस्त और अन्य को भी त्रस्त करनेवाले को असूर कहना भूल नहीं होंगी।

इन देवियों को शिवशक्ति क्यों कहते ?

जन्म-जीवन-मृत्यु की शृंखला में प्रत्येक मनुष्य का जीवन गुजरता है और उस बीच अनुकूल-प्रतिकूल, विविध विरोधाभासी परिस्थितियां, अनेकानेक छोटी बड़ी परीक्षायें आती हैं, फिर प्राकृतिक आपदायें या मौसम का अभिशाप या अनेक प्रकार की कमजोरियाँ, कमीयाँ, अवगुण या किसी न किसी शक्ति की कमी जीसके कारण जय के बदले पराजय होता है अर्थात हार-जीत आदि आदि....अनेकानेक बातें सामने आती है। इन बातों में विजयी होने के लिये शक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। जैसे कि सहन शक्ति, सामना करने की शक्ति, समेटने की शक्ति, स्वीकार करने की शक्ति, क्षमा शक्ति, भूलने-भूलाने की शक्ति, याद रखने की शक्ति आदि। तो इन शक्तियों को मनुष्य कहां से प्राप्त करें? तब मनुष्य इन देवियों के पास आता है, और इन शिव-शक्तियों से शक्ति के लिए नतमस्तक हो झोली फैलाते है और उनकी पुकार सुनकर माँ दयालु-कृपालु बन उनको शक्तिशाली बनाती है। और अपनी संतान रूप भक्तों की रक्षक बन रक्षा करती है। विजयी बनाती, खुशहाल करती, धन्य करती और भगवान-ईश्वर प्रति उनकी आस्था-श्रद्धा-भक्ति-प्रेम और विश्वास बढाती है। इसलिये यह शक्तियाँ गाई जाती, पूजी जाती व माँ की तरह हर पल याद आती रहती है।

गरबा-रास क्या है? क्यों है

नवरात्रि में देवियों शक्तियों के पूजन के साथ दीप प्रज्वलन किये जाते है, साथ साथ पूजा-आरती-अर्चना करते है। क्यों करते है वह तो सहज समज में आता हैं, परन्तु गरबा-रास क्यों करते है? क्या है ? इस गरबा-रास में संगठित रूप से महिला वर्ग पुरूषवर्ग दोनों मिलकर इकट्ठे दोनो हाथों के पंजो को मिलाते ताल से ताल मिलाते, आवाज सुनाते या फिर दांडिया द्वारा आवाज प्रकट करके खुशियों को व्यक्त करते है। क्या ऐसा नहीं लगता कि जैसे प्रत्येक घर के मालिक के साथ उसके घर के सभी सदस्य घर की व्यवस्था के संचालन में साथी (भुजा) बनकर साथ देते है। तो ये सर्व का संगठन व एकता व साथ के परीणाम स्वरूप घर खुशियों से झुम उठता है। घर में छोट बडे झगड़े होते भी स्वभाव-संस्कार टकराने के बावजूद भी सुख के चक्कर व फेरों को फीरते भी आनंद उठाते, लुफ्त उठाते, आपस में जीवन की क्षणों को खुशी से जीते है , खेलते है ।

रात्रि कौनसी?

अब 'नवरात्रि' शब्द में जो रात्रि शब्द आता है उसका महामत्य देखें । अब ये कौनसी रात्रि है? जो देवियों शक्तियों के साथ जुडी है। यह रात्रि है शास्त्रोक्त ब्रह्मा की रातवाली रात्रि हैं। कालचक्र में आधा समय है ब्रह्मा का दिन और आधा समय है ब्रह्मा की रात्रि। अर्थात चार युगों में सतयुग, त्रेतायुग दो युग है ब्रह्मा का दिन और द्वापरयुग कलियुग है ब्रह्मा की रात्रि। तो जब ब्रह्मा की रात्रि का अंतिम समय होता है। जब सृष्टि पर भ्रष्टाचार, पापाचार, दुःख,अशांति और विषय विकार अपना डेरा डालकर बैठे होते है। लोग धर्मभ्रष्ट, कर्मभ्रष्ट, हो जाते है, ऐसे ही धर्म ग्लानी का समय कहा जाता है। तब स्वंय सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव गीता में दिये हुए

अपने वचनानुसार सृष्टि पर अवतरीत होते है। परमपिता परमात्मा 'शिव' जो 'ज्योर्तिबिन्दु' है, अर्थात प्रकाश पुंज है, स्वंयभू सर्व धर्म की आत्माओं के सर्वमान्य पिता है, जो ईश्वर, खुदा, भगवान है जो सर्व का पतित-पावन , सुख-शांति का दाता व उद्धारक तथा नवयुग का निर्माता है। तथा शक्तियों का जन्मदाता है। तो स्वंय शिवपिता इन भिन्न शक्तियों द्वारा विषय विकारों रूपी भिन्न भिन्न नामवाले आसूरी नर नारीयों की आसूरी मनोवृतियों का संहार कराकर सृष्टि पर नवीन युग, अर्थात सुवर्णकाल का नवप्रभात का समय फिर से लाते है।

<u>नवरात्रि का संदेश</u>

नवरात्रि कहती है जीवन में रोशनी लाओ, रोशनी में जीओ जीवन में सकारात्मक नवीनता लाओ। यदि जीवन में नकारात्मकता है, अंधियारा है या फिर जीवनमें रात्रि समान अशांति-निराशा, उदासी या हताशा है तो, ज्ञान की, समज की, समझौते की, अनुभव की, शिक्षाओं की ज्योत जलाओ। येन-केन प्रकारेण जीवन में रोशनी करो। किसीकी मदद लेनी पडे तो वह भी लो परंतु रोशनी के लिए हर हालत में दीप जलाओ और जीवन जो प्रभू की अमूल्य भेंट है उसमें उत्साह-उमंग का घृत डालो और फिर समीप के या दूर के, सर्व साथियों के साथ, स्नेहपूर्ण व्यवहार करते, उनके स्वभाव-संकारों में ताल मिलावें ताँकी सबके साथ चल सकें, हम किसी अच्छे मकसद के साथ जीयें और जीवन को सफल करें। सबके उपर परमपिता परमात्मा शिव सहित, माँ शिव-शक्तियों की, देवियों की अमीट दृष्टि हो, कृपा दृष्टि हो।

ओम शांति!